E-CONTENT FOR SEMESTER II

अनुभववाद – 2
(EMPIRICISM – 2)

BY: SWATI SOURAV
POSTGRADUATE DEARTMENT OF SOCIOLOGY
PATNA UNIVERSITY

जॉन लॉक (JOHN LOCKE)

- जॉन लॉक का जन्म 29 अगस्त, 1632 में हुआ।
- वह बहुत ही आदरणीय ब्रिटिश दार्शनिक थे।
- उनकी पढ़ाई ऑक्सफ़ोर्ड से हुई जहाँ वे औषधि (medicine) के शोधार्थी रहे।
- उन्होंने व्यापार और उपनिवेशों के बारे में जानकारी एकत्र करने के लिए एक सरकारी अधिकारी प्रभारी के रूप में कार्य किया।
- वह एक आर्थिक लेखक, राजनीतिक कार्यकर्ता और क्रांतिकारी थे।
- लॉक के अधिकांश कार्यों की विशेषता सत्तावाद का विरोध है, दोनों - व्यक्ति के और सरकार और चर्च जैसे संस्थानों के - स्तर पर।
- उनका मानना था कि राजाओं को शासन करने के लिए कोई दैवीय अधिकार नहीं थे।
- उनका यह भी मानना था कि मनुष्य स्वतंत्र हैं और इस स्थिति में सभी मनुष्य समान हैं।

लॉक का अनुभववाद का सिद्धांत
(JOHN LOCKE'S THEORY OF EMPIRICISM)

- लॉक का संबंध उन सामग्रियों से था जिनसे हमारा ज्ञान बनता है।
- वह मानव ज्ञान की विशेषता एवं उसकी सीमा की जांच करना चाहते थे।
- उन्होंने अपनी पुस्तक – 'एन एसे कंसर्निंग ह्यूमन अंडरस्टैंडिंग', जिसका प्रकाशन 1960 में हुआ – में अपने केन्द्रीय विचारों को बताया है।
- लॉक के लिए एक बच्चे का दिमाग एक खाली पन्ने की तरह होता है और सारे विचार उसके वास्तविक अनुभव से आते हैं।
- मस्तिष्क के पास कोई जन्मजात विचार नहीं होता, लेकिन उसके पास जन्मजात शिक्षा संकाय होता है जिसका कार्य है समझना, याद रखना, और जोभी विचार आये उनको जोड़ना।
- मस्तिष्क के पास खुद के अरमान होते हैं, विचार-विमर्श करने की योग्यता होती है एवं इसकी खुद की इच्छा-शक्ति होती है।

To be Cont.

- जो भी मानसिक गतिविधियाँ होती हैं, वे स्वयं एक नए वर्ग के विचारों का श्रोत हैं।
- अतः अनुभव दोहरा होता है – एक तरफ देखने, सुनने, छूने आदि के संवेदनाओं के विचार हैं, और दूसरी तरफ, प्रतिबिंब के विचार हैं जैसे की सोचना, विश्वास करना, इत्यादि।
- पहला विचार सरल होता है जहाँ मन निष्क्रिय होता है और दूसरा प्रतिबिंब वाला अधिक जटिल और सक्रिय होता है। इस तरह के विचार हमारे अपने मानसिक अनुभवों (आत्मनिरीक्षण) के बारे में हमारी जागरूकता को दर्शाते हैं।
- हमारे अनुभव किये गए विचार और वस्तु के बीच संबंध की बात करें तो लॉक द्वारा किया गया भेद समझना होगा।
- उनका तर्क है कि वस्तुओं में गुण होते हैं, जो मन में एक विचार उत्पन्न करते हैं।
- ये प्राथमिक और द्वितीयक गुण हैं।प्राथमिक गुण वे गुण हैं जो गंध, रंग, स्वाद और ध्वनि जैसी इंद्रियों द्वारा निर्मित होते हैं।
- द्वितीयक गुण वे हैं जो थोक, कठोरता, आयतन इत्यादि को संदर्भित करते हैं।

To be Cont.

- लोके के अनुसार, प्रकृति के यांत्रिक संचालन हमारे लिए छिपे हुए हैं।
- सावधानीपूर्वक अवलोकन और प्रयोग, सामान्य रूप से हमारे द्वारा सामना की जाने वाली चीजों के प्रकारों के दिखावे के बारे में सामान्यीकरण के एक विश्वसनीय सेट का समर्थन कर सकते हैं, लेकिन हम उनके सच्चे संकेतों के बारे में कल्पना भी नहीं कर सकते हैं।
- लॉक के अनुसार, हम अनिवार्य रूप से जो भी जानते हैं, वह एक विचार या बात का नाममात्र सार है।
- इस प्रकार, पदार्थों के लिए सामान्य नाम वे सामान्य शब्द हैं जिनके माध्यम से हम उन्हें वैसे वर्गीकृत करते हैं जैसे हम उन्हें देखते हैं। हम खुद चीजों के अर्थ पर सहमत हो सकते हैं।
- लॉक ने माना कि हमारे ज्ञान की सीमा काफी सीमित है; हम ज्यादा से ज्यादा संभावित ज्ञान के लिए उम्मीद कर सकते हैं।
- वह इस तर्क को ज्ञान की सामान्य प्रकृति तक विस्तारित करता है और विचारों की सहमति या असहमति के रूप में ज्ञान की एक भ्रामक सरल धारणा के साथ आता है।
- इन सबका परिणाम यह है कि हमारा ज्ञान सीमित है।

To be Cont.

- लॉक की परिभाषा के अनुसार, हम केवल तभी वास्तविक ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं जब हमारे पास स्पष्ट विचार हों और उनके बीच संबंध का पता लगाने के लिए उनके समझौते या असहमति को समझ सकें। यह बहुत बार नहीं होता है, खासकर जहां पदार्थ जारी हैं।
- लॉक के प्रयासों ने इस कारण निष्कर्ष निकाला है कि निश्चित रूप हमारी पहुंच के भीतर शायद ही कभी हो; और इसलिए हमें अक्सर संभावित ज्ञान या केवल राय के साथ संतुष्ट होना चाहिए।
- लॉक अंततः यह अनुशंसा करता है कि हुम ज्ञान-मीमांसा सम्बंधित काफ़ी कम अपेक्षाओं को अपनाते हैं।
- ह्यूम एक और कदम उठाता है और किसी के ज्ञान की निश्चितता की अपेक्षाओं को शुरू होने के लिए संदेह से कम करता है।

आलोचना (CRITICISM)

- जॉन लॉक ने अपने समकालीनों द्वारा मानव समझ की प्रक्रिया को देखने के तरीके को प्रभावित किया।
- उनमें से कई उसके विचारों से असहमत थे।
- उनकी प्रमुख आलोचना जॉर्ज बर्कले से आयी थी, जिन्होंने जॉन लॉक के विचारों के उत्तर में दो पुस्तकें लिखी थी (त्रेअतिसे कंसर्निंग थे प्रिंसिपल्स ऑफ़ ह्यूमन नॉलेज, 1710) और (थ्री डायलॉग्स बिटवीन हिलेस और फिलोनस, 1734)।
- लॉक के सिद्धांतों के विपरीत कि दुनिया का मौलिक सार पदार्थ था, और दिमाग केवल एक निष्क्रिय साधन था, बर्कले ने पहले दिमाग लगाया और कहा कि चीजें केवल तभी मौजूद होती हैं जब वे मन से माना जाता है।

धन्यवाद